विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। –प्रेमचंद

डिजिटल प्रौद्योगिकी ने सिनेमा के अनुभव को बदल दिया है

इन दिनों यह परिभाषित करना कठिनतर होता जा रहा है कि सिनेमा क्या है? अब ज्यादातर लोग सिनेमाघरों में जाने की बजाय विशाल फ्लैट स्क्रीन टीवी, हाथ में रख सक्ने वाले टैबलेट, मेज पर रखे कंप्यूटर या अपने स्मार्टफोन पर चलचित्र देखते हैं। सिनेमा के दृश्यों को अब सेल्यूलॉइड फिल्म पर नहीं उतारा जाता। अब डिजिटल माध्यम से वीडियो फॉर्मेट में चलचित्र बनाये जाते हैं। कभी कैमरा, लाइट, फिल्म, प्रोजेक्टर और स्क्रीन का रिश्ता हुआ करता था। लेकिन ये सभी इतिहास की चीजें बनती जा रही हैं। तकनीकी छलांग ने फिल्में बनाने और प्रदर्शित करने के तरीकों को ऐसा आमूल बदला है कि आईफोन के कैमरे की संभावनाओं से रोमांचित महान फिल्मकार ज्यां लुक गो'दार की यह भविष्यवाणी सच हो साबित हो रही है कि फोन कैमरे फिल्म निर्माताओं की एक नई पीढ़ी को जन्म देंगे। अब तो एक साधारण हैंडहेल्ड डिवाइस से कोई भी फ़िल्म शूट कर सकता है, उसे संपादित कर बड़े पैमाने पर वितरित कर सकता है। इस तरह नये सिनेमा में छवियों को पकड़ने तथा उनके माध्यम से कहानी कहने का शिल्प बदल गया है। व्यावसायिक मनोरंजन की दुनिया में तो नया सिनेमा ध्वनि के माध्यम से दर्शकों को छवियां दिखाने का प्रयत्न कररहा है। एक प्रकार से उसने दृश्यों के फ्रेमिंग की धारणा को ही बदल कर रख दिया है। सिनेमा एक ऐसा माध्यम है जो समय के साथ लगातार विकसित होता रहा है। सिनेमा की शुरुआत मूक फिल्मों से हुई। आज हम वीएफएक्स, सीजीआई और 3डी तकनीक से युक्त सिनेमा का आनंद ले रहे हैं। इस पूरे विकास क्रम में क्रांतिकारी मोड़ तब आया जब परंपरागत सेलुलॉइड फिल्मों की जगह डिजिटल फॉर्मेट ने ले ली। इस परिवर्तन ने न केवल फिल्मों के निर्माण की तकनीक को बदला, बल्कि उनके वितरण, प्रदर्शनी और दर्शकों की देखने की आदतों को भी पूरी तरह से बदल दिया। परंपरागत सिनेमा में कैमरे के जरिए शूट करके फिल्म को रील पर दर्ज किया जाता था। इसमें भारी-भरकम कैमरे, रील्स और डार्करूम में डेवलपिंग जैसी प्रक्रिया शामिल होती थी। वहीं, डिजिटल फॉर्मेट के आगमन से यह पूरी प्रक्रिया बदल गई और कहीं अधिक सहज, तीव्र और किफायती हो गई है। आज फिल्मकार हाई-डेफिनिशन (एचडी), 4के और 8के जैसे डिजिटल कैमरों का उपयोग कर रहे हैं, जिनसे शूटिंग की गुणवत्ता कई गुना बढ़ जाती है। एडिटिंग भी अब डिजिटल सॉफ्टवेयर के माध्यम से की जाती है जैसे– 'अडोबी प्रीमियर', 'फाइनल कट प्रो' आदि, जिससे फिल्म संपादन सरल, तेज और अधिक सटीक हो गया है। डिजिटल फॉर्मेट ने स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं और नए निर्देशकों को भी फिल्में बनाने के अवसर दिये हैं, क्योंकि इसमें निर्माण, वितरण और प्रदर्शन की लागत परंपरागत फिल्मों की तुलना में बहुत कम हो जाती है। पहले मूल निगेटिव से फिल्मों के प्रिन्ट बनते थे और फिल्मों की रीलें डिब्बों में रखी जाती थी और ये डिब्बे पेटियों में बंद कर थियेटरों में प्रदर्शन के लिए भेजे जाते थे। डिजिटल फॉर्मेट ने इसे पूरी तरह बदल दिया है। अब फिल्में हार्ड ड्राइव्स, इंटरनेट या सैटेलाइट के जरिए थियेटरों तक पहुंचाई जाती हैं। इससे वितरण और प्रदर्शन लागत में भारी कमी आई है। डिजिटल सिनेमा पैकेज (डीसीपी) एक ऐसा फॉर्मेट है जिसमें फिल्म को एन्क्रिप्टेड रूप में भेजा जाता है, जिससे पाइरेसी को भी नियंत्रित किये जाने के उपाय किए जाते हैं।

थियेटर अब डिजिटल प्रोजेक्टर से सुसज्जित हैं, जिससे रील बदलने की आवश्यकता नहीं होती, और दर्शकों को अधिक स्पष्ट और आकर्षक चित्र देखने को मिलते हैं। डिजिटल सिनेमा ने दर्शकों के लिए फिल्म देखने के अनुभव को भी अत्याधुनिक बना दिया है। डिजिटल फिल्में 4के रिज़ॉल्यूशन और डॉल्बी डिजिटल साउंड जैसे फीचर्स के साथ आती हैं, जिससे थियेटर में सिनेमा देखने का आनंद कई गुना बढ़ जाता है। डिजिटल तकनीक के कारण ही आज दर्शक 3डी फिल्मों और अद्भुत वीएफएक्स का अनुभव ले पा रहे हैं, जो परंपरागत सिनेमा में संभव नहीं था। लेकिन अब नई प्रौद्योगिकी दर्शकों को सिनेमाघरों से दूर भी कर रही है तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म्स सिनेमा और टीवी के बीच की रेखा धुंधली कर दे रहे हैं। अब बड़े फिल्मी सितारे और निर्देशक भी वेब सीरीज़ बना रहे हैं, जो कभी सिर्फ टीवी तक सीमित था। डिजिटल फॉर्मेट की सबसे बड़ी देन ओटीटी (ओवर-द-टॉप) प्लेटफॉर्म हैं, जिनसे दर्शक अब कहीं भी और कभी भी अपनी पसंद की फिल्में देख सकते हैं। वास्तव में डिजिटल फॉर्मेट ने सिनेमा को लोकतांत्रिक बना दिया है। अब हर व्यक्ति जिसके पास कहने को कुछ है, वह फिल्म बना सकता है। आज स्मार्टफोन से भी अच्छी क्वालिटी की फिल्में बन रही हैं। इसका उदाहरण है आईफोन 7 प्लस पर शूट की गई 'अनसेन' जैसी फिल्में, जो व्यावसायिक सफलताएं भी पा रही हैं। यूट्ययूब, इंस्टाग्राम रील्स और शॉर्ट फिल्म प्लेटफॉर्म्स से नए कलाकारों को पहली बार मंच मिल रहा है और इसी कारण अब नये-नये सामाजिक, राजनीतिक और संवेदनशील मुद्दों पर फिल्में बनाई जाने लगी हैं, जो पहले संभव न था। हालांकि इससे सामाजिक नैतिक मुद्दों के सवाल भी उठ रहे हैं। डिजिटल सिनेमा ने रोजगार के नए अवसर भी पैदा किए हैं। एडिटिंग, कलर ग्रेडिंग, ग्राफिक डिजाइन, वीएफएक्स, साउंड इंजीनियरिंग जैसी डिजिटल स्किल्स की मांग तेजी से बढ़ी है। अब कलाकार और तकनीशियन स्वतंत्र रूप से ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से काम पा सकते हैं, जो पहले कठिन था। डिजिटल फॉर्मेट ने परंपरागत सिनेमा के लगभग हर पहलू को प्रभावित किया है – चाहे वह निर्माण हो, वितरण हो, प्रदर्शन हो, विषयवस्तु हो या दर्शकों का अनुभव। इसने सिनेमा का सार्वजनीकरण कर दिया है। यह परिवर्तन जितना तकनीकी है, उतना ही सामाजिक और सांस्कृतिक भी है। हालांकि, इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी आई हैं जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर कंटेंट की अधिकता से गुणवत्ता का ह्रास, थिएटर संस्कृति का क्षरण और पाइरेसी के नये जातं। फिर भी यह कहना उचित होगा कि डिजिटल फॉर्मेट ने सिनेमा को एक नई दिशा और ऊंचाई दी है, जिससे भविष्य के लिए अनंत संभावनाओं के द्वार खुलेंगे।

अब हर व्यक्ति जिसके पास कहने को कुछ है, वह फिल्म बना सकता है। आज स्मार्टफोन से भी अच्छी क्वालिटी की फिल्में बन रही हैं। इसका उदाहरण है आईफोन 7 प्लस पर शूट की गई 'अनसेन' जैसी फिल्में, जो व्यावसायिक सफलताएं भी पा रही हैं। हालांकि इससे सामाजिक नैतिक मुद्दों के सवाल भी उठ रहे हैं।

भारत में सिनेमा मनोरंजन व्यवसाय जगत का बड़ा खिलाड़ी रहा है। इस बाज़ार में अब फिल्मों को भी फ्रैंचाइज़ी या एपिसोडिक फॉर्म में देखा जा रहा है, जो टीवी सीरियलों की तरह हर फिल्म में कुछ अधूरी कहानी छोड़ता है ताकि दर्शक अगली कड़ी का इंतजार करें। टीवी सीरियल्स की तरह अब डिजिटल फिल्मों और वेब सीरीज़ में किरदारों की गहराई, लंबे प्लॉट, और धीमी गति से कहानी का विस्तार देखा जा सकता है, जो पारंपरिक दो-तीन घंटे की फिल्मों में मुश्किल होता था। अब दर्शक बिंज-वॉचिंग (एक साथ कई एपिसोड देखने) के आदी हो चले हैं। इसलिए सिनेमा को भी उनके अनुरूप खुद को ढालना पड़ा है, जिससे उसका फॉर्मेट और टेम्पो टीवी सीरियल जैसा महसूस होने लगा है। डिजिटल कैमरा, वीएफएक्स और एडिटिंग टूल्स की वजह से अब कम बजट में भी ऐसा कंटेंट बनाया जा सकता है जो बड़े सिनेमा जितना भव्य हो। हालांकि डिजिटल तकनीक ने सिनेमा को कहानी कहने के तरीके, दर्शक की आदतें और प्रस्तुतिकरण में टीवी सीरियल जैसा बना दिया है, लेकिन यह भी सच है कि इससे स्वतंत्र रचनाकारों को नई आज़ादी मिली है और उनके लिए विविधता और प्रयोग के अवसर बढ़ गए हैं। भले ही उन लोगों की संख्या बढ़ गई है जो अब घर बैठे फिल्में देखना पसंद करते हैं, लेकिन बड़े परदे का अनुभव, साउंड क्वालिटी और थिएटर का माहौल अब भी अनोखा बना हुआ है। खासकर बड़े बजट की फिल्में अपने विजुअल तथा साउन्ड इफेक्ट्स के जरिए दर्शकों को सिनेमाघरों की ओर खींचती हैं और सफल भी होती हैं। मगर युवा दर्शक छोटे फॉर्मैट,जैसे यूट्ययूब, रील, शॉर्ट फिल्मकी ओर आकर्षित हो रहे हैं। लंबी फिल्मों के बजाय अब वेब सीरीज और एपिसोडिक कंटेंट ज्यादा देखे जा रहे हैं। एक समय था जब दर्शक फिल्म शुरू होने से पहले बड़े ध्यान से सेंसर सर्टिफिकेट को देखा करते थे, और उसमें खास तौर पर फिल्म की रीलों की संख्या और लंबाई पर अवश्य नज़र डालते थे। फिल्में तब सेलुलॉइड रीलों पर आती थीं, और एक रील लगभग 1000 फीट की होती थी, जो लगभग 10-11 मिनट की फिल्म को समेटती थी। तो अगर किसी फिल्म में 15-16 रीलें होती थीं, तो वह फिल्म लगभग ढाई घंटे की मानी जाती थी। अब डिजिटल युग में यह चलन खत्म हो गया है – फिल्में डिजिटल प्रोजेक्शन से चलती हैं, रीलें नहीं होतीं, और सेंसर सर्टिफिकेट को कोई नहीं देखता है। पर समीक्षकों का कहना है कि यह बदलाव केवल 'फॉर्मैट' में है, सिनेमा के प्रति प्रेम में नहीं, जो अब भी बना हुआ है। डिजिटल युग में कंटेंट की भरमार से कभी-कभी गुणवत्ता प्रभावित होती लगती है, लेकिन अच्छी कहानियां फिर भी टिकती हैं और दर्शकों का ध्यान खींचती हैं। परिवर्तन के दौर में सिनेमा एक नया रूप ले रहा है। डिजिटल युग के सिनेमा में प्रयोग, विविधता और व्यापक पहुंच जैसी संभावनाएं हैं। डिजिटल फॉर्मेट पुराने जमाने में बनी फिल्मों के संरक्षण और उनको मूल जैसी अवस्था में संरक्षित करने अर्थात रेस्टोरेशन को भी संभव बना रहा है। अनेक क्लासिक फिल्मों को डिजिटल रूप में स्कैन कर संरक्षित किया गया है, जिससे वे अगली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सकें। डिजिटल तकनीक की मदद से पुरानी फिल्मों के ध्वनि और रंग को सुधारा जा सकता है, जिससे वे परदे पर वैसी सी स्पष्ट नज़र आती हैं जैसी वे अपने प्रथम प्रदर्शन के समय थीं।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

भारत-पाक युद्ध : भक्ति, आस्था एवं आराध्य का विश्वास

अविनाश जोशी

भारत-पाक युद्ध पर आध्यात्मिक विचारों और भक्ति भाव का प्रभाव एक महत्वपूर्ण विषय है एवं इस विषय पे मंथन हमारे विचारों को ओर अधिक आत्मिक बल एवं शक्ति प्रदान करता है। आस्था, मनोबल और राष्ट्रवाद का संगम अगर विचारों में आ जाए तो हमारा सैन्य बल एवं सीमाओं में रहने वाले नागरिक ज्यादा आत्मविश्वास से आगे बढ़ सकते है।

युद्ध, मानवीय इतिहास का एक क्रूर और विनाशकारी अध्याय रहा है, जहाँ जीवन और मृत्यु के बीच की रेखा धुंधली पड़ जाती है। ऐसे विषम परिस्थितियों में, सैन्य रणनीतियों और हथियारों के अलावा, कुछ अदृश्य शक्तियाँ भी निर्णायक भूमिका निभाती हैं – वे हैं आस्था, विश्वास और भक्ति। ये तत्व न केवल सैनिकों के मनोबल को प्रभावित करते हैं, बल्कि राष्ट्र के सामूहिक चेतना और युद्ध के प्रति दृष्टिकोण को भी आकार देते हैं।

भारत और पाकिस्तान के बीच हुए संघर्षों का इतिहास मात्र सैन्य रणनीतियों या राजनीतिक दांव-पेचों का लेखा-जोखा नहीं है, बल्कि यह उन अदृश्य शक्तियों और मानवीय भावनाओं का भी दर्पण है जिन्होंने युद्ध के मैदान और जनमानस दोनों को प्रभावित किया है। इन युद्धों के दौरान, आध्यात्मिक विचारों और भक्ति का गहरा प्रभाव देखा गया, जिसने सैनिकों के मनोबल, नागरिकों की एकजुटता और राष्ट्रवाद की भावना को अप्रत्याशित रूप से आकार दिया। विचारधारा और औचित्य का आधार भारत-पाक विभाजन स्वयं धार्मिक पहचान के आधार पर हुआ था, जिसने दोनों राष्ट्रों के बीच एक मूलभूत वैचारिक अंतर पैदा किया।

युद्ध के मैदान में सैनिकों को अक्सर शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की चरम चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में, किसी उच्च शक्ति, अपने देश के आदर्शों, या अपने उद्देश्य की पवित्रता में अटूट आस्था उनमें अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प भर देती है। यह विश्वास कि वे किसी बड़े उद्देश्य के लिए लड़ रहे हैं या किसी ईश्वरीय शक्ति का आशीर्वाद उनके साथ है, उन्हें भय और अनिश्चितता के बावजूद आगे बढ़ने की शक्ति देता है। देशभक्ति या धार्मिक प्रतीकों के प्रति गहरी भक्ति सैनिकों को अपनी जान की परवाह किए बिना कर्तव्य पथ पर बढ़ने के लिए प्रेरित करती है, यह मानते हुए कि उनका बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा।

भारतीय संदर्भ में, भगवद गीता में वर्णित धर्म युद्ध का सिद्धांत, जो न्याय और सत्य की स्थापना के लिए आवश्यक होने पर युद्ध को एक कर्तव्य मानता है, ने संघर्ष में संलग्न होने के लिए एक नैतिक और दार्शनिक आधार प्रदान किया। यह विचार कि अन्याय और हिंसा के समक्ष निष्क्रिय रहना स्वयं एक अधर्म है, भारतीय सैनिकों और नागरिकों के लिए एक शक्तिशाली प्रेरणा स्त्रोत बना।

मनोबल और प्रेरणा में भक्ति का योगदान

युद्धकाल में सैनिकों के मनोबल को बनाए रखना सर्वोच्च प्राथमिकता होती है, और यहाँ भक्ति व आध्यात्मिक विश्वासों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ईश्वर में अटूट विश्वास, कर्म के सिद्धांत और देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने की भावना ने सैनिकों को अत्यधिक दबाव और जीवन-मृत्यु की परिस्थितियों में भी अडिग रहने की शक्ति दी।

इसका सबसे सशक्त उदाहरण राजस्थान के जैसलमेर जिले में स्थित तनोट माता मंदिर है। 1965 और 1971 के भारत-पाक युद्धों के दौरान, यह माना जाता है कि पाकिस्तानी सेना द्वारा गिराए गए सैकड़ों बम मंदिर परिसर को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सके। इस घटना को सैनिकों और स्थानीय लोगों ने माता के आशीर्वाद के रूप में देखा। यह मंदिर भारतीय सेना के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणा स्त्रोत बन गया है और इसे दिव्य संरक्षण के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है। यह दिखाता है कि कैसे धार्मिक आस्थाएँ युद्ध के बीच भी सैनिकों को आशा और सुरक्षा की भावना प्रदान कर सकती हैं। कई सैनिकों ने युद्ध के मैदान में भी अपनी व्यक्तिगत भक्ति को बनाए रखा।

युद्ध से पहले या दौरान प्रार्थना करना, अपने इष्टदेव का स्मरण करना, या धार्मिक ठांथों का पाठ करना सैन्य बल को मानसिक शांति और आंतरिक शक्ति प्रदान करता है। लेफ्टिनेंट जनरल हनुत सिंह राठौड़, जिन्हें उनके सैनिक गुरुदेव के नाम से जानते थे, एक ऐसे सैन्य अधिकारी थे जो अपनी आध्यात्मिक प्रवृत्ति और नेतृत्व के लिए जाने जाते थे।

उनके आध्यात्मिक मूल्यों ने न केवल उनके व्यक्तिगत आचरण को बल्कि उनके सैनिकों में विश्वास और समर्पण की भावना को भी प्रभावित किया। युद्धकाल में, देशभक्ति की भावना अक्सर धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत होती थी। लोग देश की जीत और सैनिकों की सुरक्षा के लिए मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों और चर्चों में विशेष प्रार्थनाएँ करते थे। धार्मिक स्थलों पर आयोजित सामूहिक अनुष्ठान और भजन-कीर्तन जनता को एकजुट करते थे और उनमें सामूहिक आशा व संकल्प की भावना भरते थे। विभिन्न धार्मिक और आध्यात्मिक नेताओं ने भी इस दौरान अपनी भूमिका निभाई। कुछ ने युद्ध की विभीषिका को समाप्त करने और शांति स्थापित करने के लिए प्रार्थना और सद्भाव का संदेश दिया। वहीं, कुछ ने राष्ट्र की रक्षा और सैनिकों के समर्थन में लोगों को एकजुट होने का आव्हान किया। जैन मुनियों जैसे आध्यात्मिक गुरुओं ने वैश्विक शांति के लिए अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से संघर्षों को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से हल करने की आवश्यकता पर बल दिया।

अक्सर, आस्था और विश्वास युद्ध में संलग्न होने या उसका समर्थन करने के लिए एक शक्तिशाली प्रेरक शक्ति और औचित्य प्रदान करते हैं। इतिहास गवाह है कि अनेक संघर्षों को धर्म युद्ध पवित्र कर्तव्य या न्याय के लिए संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है। चाहे वह भगवद गीता का धर्म युद्ध का सिद्धांत हो, जहाँ अन्याय के विरुद्ध संघर्ष को कर्तव्य माना गया है, ये वैचारिक आधार सैनिकों और नागरिकों को यह विश्वास दिलाते हैं कि उनका संघर्ष नैतिक और आध्यात्मिक रूप से सही है। यह प्रेरणा उन्हें अपने उद्देश्य के लिए अडिग रहने और युद्ध की चुनौतियों का सामना करने की शक्ति देती है।

मानसिक सहारा और भावनात्मक लचीलापन

युद्ध का आघात और तनाव सैनिकों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालता है। आस्था और भक्ति उन्हें इन भयानक अनुभवों से निपटने में मदद करती हैं। प्रार्थना, ध्यान, या धार्मिक अनुष्ठान सैनिकों को मानसिक शांति प्रदान करते हैं और भय, चिंता तथा भावनात्मक सदमे से उबरने में सहायक होते हैं। नुकसान और हार की स्थिति में भी, विश्वास यह आशा देता है कि अंततः न्याय होगा या उनके साथियों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। यह मानवीय लचीलेपन को बढ़ाता है और उन्हें विपरीत परिस्थितियों में भी आशावान रहने की शक्ति देता है।

बलिदान की भावना और नैतिक आयाम

गहरे विश्वास और भक्ति से ओत-प्रोत व्यक्ति अपने देश, अपनी विचारधारा या अपने धर्म के लिए सर्वोच्च बलिदान देने को तैयार रहते हैं। वे मानते हैं कि उनकी मृत्यु एक नेक काम के लिए होगी और उसका कोई आध्यात्मिक या राष्ट्रीय महत्व होगा। युद्ध के बाद, वीरगति प्राप्त करने वाले सैनिकों को अक्सर धार्मिक या सांस्कृतिक नायक के रूप में सम्मानित किया जाता है, जिससे दूसरों को भी प्रेरित होकर लड़ने की प्रेरणा मिलती है। हालाँकि, यह भी महत्वपूर्ण है कि आस्था का उपयोग कभी-कभी युद्ध अपराधों को सही ठहराने या मानवीय मूल्यों का उल्लंघन करने के लिए भी किया जा सकता है, जो इस शक्ति के दोहरे पहलू को दर्शाता है।

युद्ध में आस्था, विश्वास और भक्ति की भूमिका केवल एक सहायक तत्व नहीं है, बल्कि यह संघर्षों के मनोविज्ञान और परिणाम को आकार देने वाली एक मूलभूत शक्ति है। यह सैनिकों को आंतरिक शक्ति, प्रेरणा और नैतिक बल प्रदान करती है, वहीं पूरे राष्ट्र को एकजुट करती है और उन्हें कठिन समय में दृढ़ रहने की क्षमता देती है। युद्ध की विभीषिका के बीच, ये मानवीय मूल्य और आध्यात्मिक धारणाएँ आशा की किरण और दृढ़ संकल्प का स्त्रोत बनी रहती हैं, जो मानवीय सहनशीलता की असीम गहराई को दर्शाती हैं।

–अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक

एक प्राचार्य के भरोसे चल रहा है राजलदेसर का राजकीय महाविद्यालय

महाविद्यालय में 20 पद स्वीकृत, वर्तमान में मात्र कला संकाय विषय संचालित है

- लंबे समय से प्रोफेसर एवं कार्यालयकर्मी के पद रिक्त चल रहे हैं
- छात्र-छात्राओं को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है

राजलदेसर, (निसं)। राजलदेसर कस्बे में राजकीय महाविद्यालय में लंबे समय से प्रोफेसर एवं कार्यालयकर्मी के रिक्त पद चल रहे हैं जिसमें 7 प्रोफेसर, 13 कार्यालय कर्मी जिसके कारण महाविद्यालय में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

वर्तमान में मात्र एक प्राचार्य के भरोसे चल रहा है। वर्तमान में महाविद्यालय में मात्र एक कला संकाय है जिसमें प्रथम वर्ष में 300 छात्र-छात्राएं अध्यनरत है। द्वितीय वर्ष में 180, तृतीय वर्ष में 160, इसके अलावा साइंस, कॉमर्स का विषय नहीं होने के कारण सीनियर करने वाले छात्र-छात्राओं को अन्यत्र जगह जाना पड़ता है। जिससे उनको समय के साथ-साथ आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ता है। साथ ही अभिभावकों को भी काफी परेशानी होती है। वहीं रिक्त पदों को लेकर अनेकों बार पूर्व में कांग्रेस सरकार एवं वर्तमान में भाजपा सरकार को राजलदेसर कस्बे के राजनीतिक दलों के पदाधिकारी एवं सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी की ओर से सरकार को अवगत करा चुके हैं, लेकिन किसी तरह की कोई सुनवाई नहीं हो रही है। इसके अलावा प्रथम वर्ष कला संकाय में कम सीट होने के कारण 500 आवेदन पिछले सत्र में आए थे, जिसमें मात्र 300 सीट होने के कारण छात्र-छात्राओं को दूसरी जगह प्रवेश लेना पड़ा। साथ ही आने वाले सत्र में कला संकाय में सीटें और बढ़ाने की आवश्यकता है।

राजलदेसर कस्बे में राजकीय महाविद्यालय में प्रोफेसर एवं कार्यालयकर्मी के रिक्त पद चल रहे हैं।

जानकारी अनुसार महाविद्यालय सन् 2020 के अंदर कांग्रेस सरकार में स्वीकृत हुआ था। भवन नहीं बनने के कारण श्री यूनियन क्लब विद्यालय में स्थाई तौर पर शुभारंभ किया गया था। उसके बाद सरकार द्वारा भूमि उपलब्ध करवाई गई एवं कांग्रेस की सरकार में नेशनल हाईवे 11 पर भवन का निर्माण हुआ जिसका उद्घाटन 2024 में वर्चुअल उद्घाटन करके भवन पूर्णतया रूप से संचालित होने लगा। उद्घाटन के अवसर पर रतनगढ़ विधायक पूसाराम गोदारा ने 7. 50 लाख रुपए की लागत राशि से बच्चों को बैठने के लिए फर्नीचर की घोषणा की, जो महाविद्यालय के अंदर पहुंच चुका है। इसके अलावा राजलदेसर के भामाशाहों के द्वारा अनेकों उपकरण उपलब्ध करवाई एवं जीनस कंपनी एवं श्री राजलदेसर गौशाला के संयुक्त तत्वाधान में 2 लाख की अधिक की राशि के ड्रिप पद्धति द्वारा पेड़ पौधे लगाए गए जो आज महाविद्यालय में पेड़ बड़े-बड़े हो चुके हैं, लेकिन सब कुछ होते हुए यहां पर स्टॉफ नहीं होने के कारण छात्र-छात्राओं को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

नए शिक्षा सत्र से पहले इंग्लिश मीडियम स्कूलों में शिक्षकों को पोस्टिंग मिलेगी

शिक्षा विभाग की ओर से पिछले साल 25 अगस्त को चयन परीक्षा आयोजित की गई थी

बीकानेर, (निसं)। चयन परीक्षा में चयनित 30 हजार शिक्षकों को 8 माह से पदस्थापन का इंतजार है। प्रदेश के सभी 3737 महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में राज्य सरकार की ओर से प्रवेश के निर्णय के बाद उम्मीद की जा रही है कि नए शिक्षा सत्र से पहले इन स्कूलों में शिक्षकों का पदस्थापन भी हो जाएगा। महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने के लिए शिक्षा विभाग की ओर से पिछले साल 25 अगस्त को चयन परीक्षा आयोजित की गई थी। चयन परीक्षा का परिणाम 23 दिसंबर को घोषित किया गया। जिसमें करीब 30 हजार शिक्षक चयनित हुए। चयनित शिक्षकों से पोस्टिंग के लिए 41 जिलों के आधार पर शिक्षा विभाग पूर्व में विकल्प ले चुका है। लेकिन इन शिक्षकों के पदस्थापन से पहले ही राज्य सरकार ने महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों की समीक्षा के लिए रिव्यू कमेटी का गठन कर दिया। दिसंबर में गठित हुई कमेटी ने दो दिन पूर्व ही फैसला दिया है कि वर्तमान शिक्षा सत्र में एक भी इंग्लिश मीडियम स्कूल को बंद नहीं किया जाएगा। पूर्व में संचालित सभी इंग्लिश मीडियम स्कूल में वर्तमान शिक्षा सत्र में भी प्रवेश होंगे। प्रवेश की प्रक्रिया भी 7 मई से शुरू हो चुकी है। उधर अब चयनित शिक्षक इन स्कूलों में पदस्थापन की मांग कर रहे हैं। संभावना जताई जा रही है कि 1 जुलाई से पहले चयनित शिक्षकों को इन स्कूलों में पदस्थापन दिया जा सकता है। शिक्षा विभाग की ओर से आयोजित की गई चयन परीक्षा में लगभग 30 हजार शिक्षक का चयन हुआ था। बताया जा रहा है कि इनमें से 25 हजार शिक्षकों ने विभिन्न जिलों में पदस्थापन के लिए विकल्प भरा है। ऑनलाइन सबमिट किए गए विकल्पों के आधार पर ही मेरिट से चयनित शिक्षकों को जिला आवंटित किया जाना है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 14 मई, 2025

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, अनुराधा नक्षत्र दिन 11:47 तक, परिघ योग प्रातः 6:24 तक, तैतिल करण दिन 1:33 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि और अमृत योग सूर्योदय से दिन 11:47 तक है। राजयोग दिन 11:47 तक रहेगा। आज ज्येष्ठ संक्रांति, सूर्य वृषभ में प्रवेश रात्रि 12:12 पर करेगा। पुण्य काल गुरूवार को रहेगा। गुरू मिथुन राशि में रात्रि 10:35 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ अमृत सूर्योदय से 9:03 तक, शुभ 10:43 से 12:23 तक, चर 3:43 से 5:22 तक, लाभ 5:22 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:44, सूर्यास्त 7:02

मेष
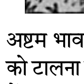

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

वृष
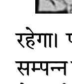

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
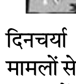

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क
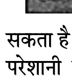

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह
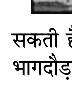

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
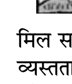

आर्थिक/वित्तीय मामलों में परिजनों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला

स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

वृश्चिक

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु
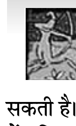

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मकर
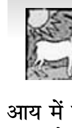

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।